# स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माणकारी शिक्षा व्यवस्था

**मोनिका शर्मा**

शिक्षा के विकास के बाद भी आज समाज में जिस प्रकार का गुणात्मक परिवर्तन होना चाहिए था, जिस प्रकार का विकास होना चाहिए था, वह नही हो पा रहा है। कई बार लगता है हम सभ्य होने के बजाय असभ्य हो रहे है और पतन की ओर जा रहे है। आज समाज में जिस प्रकार उदात्त मूल्यो का हास हो रहा है, नैतिक मूल्यों में कमी आ रही है, समाज जिस प्रकार उच्छृंखल हो रहा है, जो भ्रष्टाचार का बोल बाला दिखाई देता है, अपराध और हिंसा की वृत्ति दिखाई देती है, तब हमे यह सोचने पर मजबूर होना पडता है कि हमारी शिक्षा का स्वरुप कैसा होना चाहिए ? आज की इन परिस्थितियों में हमे स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचार प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। स्वामी विवेकानन्द से एक बार किसी ने पूछा था, कि ''आप भारत को स्वाधीन कराने का प्रयत्न क्यों नही करते''? स्वामी विवेकानन्द ने उत्तर दिया था, ''मैं कल राष्ट्र को स्वाधीनता दिला सकता हूँ। लेकिन उसकी रक्षा करने वाले मनुष्य कहाँ है''? आज स्वाधीनता के 69 वर्ष बाद तथा स्वामी विवेकानन्द के कथन के लगभग 117 वर्ष बाद हम उसी समस्या का सामना कर रहे है, जिसकी ओर स्वामी विवेकानन्द ने इंगित किया था। इस सन्दर्भ में यदि स्वामी विवेकानन्द के सन्देश एवं जीवनादर्श को कुछ ही शब्दो में व्यक्त करने का प्रयत्न किया जाए तो वह है– ''मनुष्य निर्माण करना'' और उसका उपाय है, शिक्षा।

शिक्षा मानव की उन्नति एवं विकास का एक महत्वपूर्ण उपादान है। एक श्रेष्ठ शिक्षा–पद्धति पर ही राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण तथा उसका भविष्य निर्भर है। लेकिन दुर्भाग्य है कि यही एक ऐसा विषय है, जिसकी हमारे नेताओं तथा राष्ट्रीय योजना बनाने वालों ने सबसे अधिक उपेक्षा की है। दूसरी ओर स्वामी विवेकानन्द ने अपने सन्देश में शिक्षा को सबसे अधिक महत्व प्रदान किया है। राष्ट्रीय पुनर्जागरण का विषय हो या सामाजिक सुधार का, नारी जाति के उत्थान का विषय हो या जन साधारण की समस्याओं का, व्यक्तिगत विकास का प्रश्न हो या सामूहिक विकास का, स्वामी विवेकानन्द जिस एक उपाय पर बार–बार बल देते है, वह है शिक्षा। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''शिक्षा का अर्थ है, उस पूर्णता की अभिव्यक्ति, जो सब मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान है।(2)

मानव में अन्तर्निहित पूर्णता का विचार एक विशुद्ध वेदान्तिक धारणा है। इसकी उपलब्धि मानव जीवन के स्तर और गौरव को अत्यधिक परिवर्धित कर देती है। इसकी स्वीकृति निष्ठा और आत्मविश्वास की पहली सीढी है और यह आत्मविश्वास, पौरुष एवं चरित्र का सार है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– ''मस्तिष्क में अनेक प्रकार की जानकारियों को ठूँसना ही शिक्षा नही है। यदि मस्तिष्क में अनेक प्रकार की अव्यवस्थित जानकारियाँ भरी रहे, तो वे जीवनभर कष्ट देती रहेगी। आज हमें ऐसी शिक्षा की जरुरत है, जो हमारे आने वाले जीवन को व्यवस्थित करें, जो हमें पुरुषार्थ प्रदान करें और हमारी शुभ प्रवृतियों को सबल बनाए। जो तत्व हमें सिखाए जाते हैं, उन्हें हम पूरी तरह से पचाकर आत्मसात् कर ले। शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के मेरुदण्ड का निर्माण होता है। शिक्षा पर आगामी पीढी का भविष्य निर्भर रहता है । जिस देश में शिक्षा की उपेक्षा होती है, उसके भविष्य को अन्धकारमय ही कहा जा सकता है।

**स्वामी विवेकानन्द के अनुसार :**''सारी शिक्षा तथा समस्त प्रशिक्षण का एकमेव उद्देश्य मनुष्य का निर्माण होना चाहिए। जिस संयम के द्वारा इच्छा–शक्ति का प्रवाह एवं विकास वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है, वह शिक्षा कहलाती है''।

आज हमारे बच्चे जो शिक्षा पा रहे हैं, वह निषेधात्मक है। स्कूल में बच्चे कुछ भी नही सीखते, बल्कि जो कुछ उनका अपना है, उसका भी नाश हो जाता है, और इसका परिणाम होता है–श्रद्धा का अभाव, जो श्रद्धा वेद–वेदान्त का मूल मन्त्र है।

आधुनिक शिक्षा मानव के मन के बारे में बहुत कम ज्ञान प्रदान करती है। यह ठीक है कि आधुनिक मनोविज्ञान मन के स्वरुप का कुछ ज्ञान अवश्य प्रदान करता है, लेकिन पाठ्यक्रम के किसी भी स्तर पर विद्यार्थी को अपने चंचल मन को एकाग्र करना, अपनी वासनाओं को नियंत्रित करना तथा अहंकार पर विजय प्राप्त करना नही सिखाया जाता। प्रबल भोग वासनाओं, अहं प्रेरित

क्रियाकलापों एवं निरन्तर वर्धमान लोभवृति को नियंत्रित करना बाह्यप्रवृति के नियमन से कही अधिक महत्वपूर्ण है, जिसके अभाव में बाह्यप्रवृति की शक्तियों के स्वार्थपरक एवं मानवजाति के हित के विपरीत दुरुपयोग की संभावना रहेगी। स्वामी विवेकानन्द ने इसीलिए अन्तः प्रकृति के नियमन की शिक्षा पर अधिक बल दिया है। उनकी शिक्षा प्रणाली का प्रथम सोपान एक विधायक, सकारात्मक शिक्षा प्रदान करना है जो शिक्षार्थी को स्वयं में तथा अपने भीतर प्रसुप्त महान शक्ति एवं ज्ञान में विश्वास के साथ ही पूर्वपुरुषों, अपनी संस्कृति एवं अपने राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं में, विश्वास करना सिखाए। स्वामी विवेकानन्द कहते है, ''यूरोप के अनेक नगरों की यात्रा करते समय वहां के गरीबों तक के लिए अमन–चैन और शिक्षा की सुविधाओं को देखकर मेरे मन में अपने देश के गरीबो की दशा का दृश्य खिंच जाता था। ऐसा अन्तर क्यों हुआ ? उत्तर मिला–शिक्षा, शिक्षा से आत्मविश्वास आता है, और आत्मविश्वास से अन्तर्निहित ब्रह्म–भाव जाग उठता है। भारतीय युवक–युवतियों को अपने आप में यह विश्वास रखना है कि वे सब कुछ कर सकते हैं। वे स्वयं अपने भाग्य के निर्माता है''। (5)

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''हमेऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढे, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरो पर खडे होना सीखे। जो शिक्षा सामान्य व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नही बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र–बल, परोपकार की भावना और सिंह के समान साहस नही ला सकती, वह भी क्या कोई शिक्षा है ? शिक्षा वही है, जिसके द्वारा जीवन में अपने पैरो पर खडा हुआ जाता है''। (6)

स्वामी विवेकानन्द के शब्दो में ''लोगों को यदि आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा न दी जाए–तो सारे संसार की दौलत से भारत के एक छोटे से गांव की भी सहायता नही की जा सकती। नैतिक तथा बौद्धिक–दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करना हमारा पहला कार्य होना चाहिए ''।(7)

स्वामी विवेकानन्द ने किसी भी राष्ट्र के निर्माण एवं विकास हेतु पहला कार्य आम जनता की उन्नति को बताया । किसी भी राष्ट्र का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी जनता कितनी अच्छी, बुद्धिमान तथा सुयोग्य है। कोई भी राष्ट्र एक या दो महान् व्यक्तियों को पैदा कर सकता है, परन्तु इस बात की गारन्टी नही देता कि वह देश महान होगा, जब तक कि उस देश की आम जनता शिक्षित न हो व उसका जीवन–स्तर उच्च नही हो जाता।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, ''हमारा यथार्थ राष्ट्र जो कि झोपडियों में बसता है, अपना मनुष्यत्व भूल चुका है, अपना व्यक्तित्व खो चुका है। हमें उन्हें उनका खोया हुआ व्यक्तित्व लौटाना होगा। उन्हें शिक्षित करना होगा। जो गरीब लोग शिक्षा के पास नही आ सकते, शिक्षा को उनके पास ले जाना होगा''।(8)

शिक्षा का व्यावहारिक उद्देश्य है, व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना। भूख से पीडित व्यक्ति के लिए न तो धर्म लाभदायक है और न ही उपदेश। सबसे पहले शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति विशेषतः गरीब वर्ग को उसकी आर्थिक समस्याओं से मुक्ति प्रदान करानी है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द आम जनता को व्यापार, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि व गृहस्थ जीवन की अतिआवश्यक विषयों की जानकारी प्रदान करना चाहते थे और यही कार्य उन्होंने राकृष्ण मिशन के माध्यम से किया।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा पद्धति–मानव निर्माणकारी और राष्ट्र निर्माणकारी है अर्थात ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति के चरित्र का विकास करें, ऐसी शिक्षा जो उसके दोषो को दूर करें, उसके दोषो का परिमार्जन करें और उसके सद्गुणों व सकारात्मक मूल्यों का आघात करें, उसे नैतिक मूल्य दे, उसे सामाजिक मूल्य दे, उसके चरित्र में जितनी कमियां है, उन्हें दूर करके, उसे परिष्कृत करने का कार्य करें। स्वामी विवेकानन्द ने विद्यार्थियों के लिए श्रद्धा, विश्वास, साहस, सत्य के प्रतिनिष्ठा और ब्रह्मचर्य जैसे जीवन मूल्यों को आवश्यक बताया। साथ ही हमें छात्रों को यह भी अनुभव कराना होगा कि उनकी शिक्षा केवल उन्ही के भले के लिए नही, बल्कि जनादेश–धर्म के कल्याण हेतु भी है। कोई भी शिक्षा तब तक राष्ट्रीय नही कही जा सकती जब तक कि वह देशप्रेम की प्रेरणा नही देती। इसके लिए सर्वप्रथम छात्रों में उनके देश तथा जनता के बारे में श्रद्धा उत्पन्न करना आवश्यक है। अपने पूर्वजों की महिमारुप उपलब्धियों से परिचित कराने वाला इतिहास का एक उचित शिक्षण निश्चित रुप से उनमें श्रद्धा तथा प्रशंसा का भाव उत्पन्न करेगा। वास्तविक शिक्षा तथ्यात्मक नही होती बल्कि व्यक्ति के मस्तिष्क को नियंत्रित करके उसके चरित्र को श्रेष्ट बनाने का कार्य करती है। श्रेष्ठ चरित्र का तात्पर्य है–साहस, उदारता, सत्यवादिता, परोपकारिता व मानवीयता से परिपूर्ण आचरण। अतः शिक्षा 'मनुष्य निर्माण' की प्रक्रिया है। साथ ही व्यक्ति इतना उदार बन जाए कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण हेतु अपने हितो का उत्सर्ग करने के लिए भी तत्पर रहे।

**स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–** ''आज हमे भारत में ऐसे हजारो चरित्रवान युवको की आवश्यकता है जो लाखो रुपयो के

प्रलोभन से भी राष्ट्र के सुरक्षा–रहस्यो को शत्रु के हाथ न बेचे अथवा क्षणिक उत्तेजना में आकर हत्या या अन्य अपराध न कर बैठे। ऐसे दृढचरित्र दीर्द्य साधना एवं अथक प्रयत्न द्वारा ही निर्मित हो सकता है। प्रत्येक युवक प्रतिदिन छोटे–छोटे शुभ कार्य करे। इन्हें दुहाराने से उसकी इच्छाशक्ति भी बलवती होगी। प्रतिदिन सूर्योदय के पूर्व शैय्या त्याग कर भगवान का स्मरण करना, नित्य सत्साहित का पाठ करना, सत्य वचन कहना, नियमितता रखना, गरीब, असहाय औरतों की सहायता करना, अपनी छोटी–छोटी वासनाओं का त्याग करना आदि कुछ ऐसे कार्य है जिनके नित्य अभ्यास से महान चरित्र की नींव डाली जा सकती है''। (9)

स्वामी विवेकानन्द कोरे आदर्शवादी सैद्धान्तिक ही नही थे, बल्कि अत्यन्त व्यवहारकुशल एवं कार्यक्षम भी थे। उन्होंने चरित्र गठन के साथ ही साथ अर्थकारी शिक्षा पर भी बल दिया। इसके साथ ही स्वामी विवेकानन्द ने जितना युवको की शिक्षा पर बल दिया, उतना ही युवतियों की शिक्षा पर भी। उन्होंने युवक–युवतियों के लिए बौद्धिक, चरित्रकारी व आध्यात्मिक ज्ञान के साथ ही व्यावहारिक व तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण पर बल देते हुए कहा कि ''हमें तकनीकी शिक्षा तथा उन सब चीजों की आवश्यकता है, जिनसे उद्योग–धन्धो का विकास हो, ताकि लोग नौकरी की तलाश में भटकना छोडकर, अपने लिए यथेष्ट उपार्जन कर सके और दुर्दिन के लिए बचाकर भी रख सके''। (10)

स्वामी विवेकानन्द ने विद्यार्थियों के शारीरिक विकास की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया था। स्वस्थ एवं सबल शरीर मानव निर्माण की सर्वप्रथम आवश्यकता है। यह नियमित व्यायाम, पौष्टिक आहार एवं ब्रह्मचर्य द्वारा गढ़ा जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है, वह है लोहे की मासपेशियों और फौलाद के स्नायु, दुर्दमनीय प्रचण्ड इच्छाशक्ति जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यो को भेद सके और जिस किसी उपाय से भी हो, अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में समर्थ हो''। (11)

आज हम जिस संकट और संक्रमण के काल से गुजर रहे है, जहां अस्तित्व का संकट है, जीवन मूल्यों का संकट है, अपनी पहचान का संकट है, वहां यह जरुरी है कि एक बार हम स्वयं को जानने के लिए, अपने राष्ट्र को जानने के लिए स्वामी विवेकानन्द के विचारों का मन्थन करें और उससे जो अमृत निकले, उसे अपनी नई पीढियों को वितरित करके उनके व्यक्तित्व को एक सार्थक और सकारात्मक दिशा देने में समर्थ हो सके। अतएव हमें चाहिए कि हम सभी शिक्षण संस्थाओं के द्वारा किताबी शिक्षा के साथ ही चरित्र–निर्माण, शारीरिक, आध्यात्मिक तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण का योग करने में बिल्कुल विलम्ब न करे, जिससे अच्छ मनुष्यों का निर्माण हो और वे हमारे राष्ट्र निर्माण में योगदान दे।

**सदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. ब्रह्मेशानन्द स्वामी –स्वामी विवेकानन्द, स्वरुप और संदेश रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2013, पृष्ठ सं0 67
2. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–2 अद्वैत आश्रम कोलकत्ता, 1999, पृष्ठ सं0 328
3. विदेहात्मानन्द स्वामी, स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता,, 2008, पृष्ठ सं0 127
4. विवेकानन्द साहित्य खण्ड–4, पृष्ठ सं0 172 विवेकानन्द साहित्य खण्ड–7, पृष्ठ सं0 359
5. ब्रह्मेशानन्द स्वामी –स्वामी विवेकानन्द, स्वरुप और संदेश रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2013, पृष्ठ सं0 68
6. स्वामी विवेकानन्द, मेरा भारत अमर भारत रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2009, पृष्ठ सं0 47
7. स्वामी विवेकानन्द, मेरा भारत अमर भारत रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2009, पृष्ठ सं0 32
8. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–2 अद्वैत आश्रम कोलकत्ता, 1999, पृष्ठ सं0 365
9. ब्रह्मेशानन्द स्वामी –स्वामी विवेकानन्द, स्वरुप और संदेश रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2013, पृष्ठ सं0 72, 73
10. निर्वेदानन्द स्वामी – हमारी शिक्षा रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2014, पृष्ठ सं0 46
11. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–5 अद्वैत आश्रम कोलकत्ता, 1999, पृष्ठ सं0 86


***Research Scholar***
***Department of Political Science, UOR Jaipur***